श्री दुर्गा चालीसा

HINDU GALLERY
Your Divinity Portal

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ॥ १ ॥
निराकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥ २ ॥
शशि ललाट मुख महाविशाला । नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥ ३ ॥
रूप मातु को अधिक सुहावे । दरश करत जन अति सुख पावे ॥ ४ ॥
तुम संसार शक्ति लय कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ॥ ५ ॥
अन्नपूर्णा हुई जग पाला । तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥ ६ ॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी । तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥ ७ ॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें । ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥ ८ ॥
रूप सरस्वती को तुम धारा । दे सुबुद्धि ऋषि-मुनिन उबारा ॥ ९ ॥
धरा रूप नरसिंह को अम्बा । प्रगट भईं फाड़कर खम्बा ॥ १० ॥
रक्षा कर प्रह्लाद बचायो । हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ॥ ११ ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं । श्री नारायण अंग समाहीं ॥ १२ ॥
क्षीरसिन्धु में करत विलासा । दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥ १३ ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानी ॥ १४ ॥
मातंगी अरु धूमावति माता । भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥ १५ ॥
श्री भैरव तारा जग तारिणी । छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ॥ १६ ॥
केहरि वाहन सोह भवानी । लांगुर वीर चलत अगवानी ॥ १७ ॥
कर में खप्पर-खड्ग विराजै । जाको देख काल डर भाजे ॥ १८ ॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला । जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥ १९ ॥
नगर कोटि में तुम्हीं विराजत । तिहूंलोक में डंका बाजत ॥ २० ॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे । रक्तबीज शंखन संहारे ॥ २१ ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी । जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥ २२ ॥
रूप कराल कालिका धारा । सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥ २३ ॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब-जब । भई सहाय मातु तुम तब तब ॥ २४ ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका । तब महिमा सब रहें अशोका ॥ २५ ॥
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी । तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥ २६ ॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावै । दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें ॥ २७ ॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई ॥ २८ ॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी । योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥ २९ ॥
शंकर आचारज तप कीनो । काम अरु क्रोध जीति सब लीनो ॥ ३० ॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को । काहू काल नहिं सुमिरो तुमको ॥ ३१ ॥
शक्ति रूप को मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछितायो ॥ ३२ ॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥ ३३ ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा । दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥ ३४ ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो । तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ॥ ३५ ॥
आशा तृष्णा निपट सतावे । मोह मदादिक सब विनशावै ॥ ३६ ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी । सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ॥ ३७ ॥
करो कृपा हे मातु दयाला । ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ॥ ३८ ॥
जब लगि जियउं दया फल पाऊं । तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं ॥ ३९ ॥
दुर्गा चालीसा जो नित गावै । सब सुख भोग परमपद पावै ॥ ४० ॥
देवीदास शरण निज जानी । करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥

Source: https://www.hindugallery.com/